सामर्थी बनाना
अधिवेशन 6

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है भाग–2

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है — भाग 2

चौथा ''शब्द — क्रियात्मक तस्वीर'' का वर्णन, कि परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है, ऐसे करता है कि कलिसिये हम है... हम मसीह की देह, आसानी से पहचान जा सकते हैं

- 1 कुरिन्थियों 12:27 में पौलुस कहता है, ''अब तुम मिलकर मसीह की देह और अलग—2 उसके अंग हो।''

- मसीह की देह, कलीसिया, एक **भेद** है जिसे सदीयों से रहस्य रखा गया है। इफिसीयों 3 में पौलुस इस भेद के बारे में कहता है। वह कह रहा है कि कलीसिया यहूदीयों और अन्यजातियों, सभी जातियों के लोगों और सभी तरह की पृष्ठ भूमि को लेकर मसीह की देह को पैदा करती हैं।

- परमेश्वर ने विभिन्न तरीको से पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में रहना चुना है।

    ० पुराने नियम में उसने तम्बु में वास किया।

    ० नये नियम में वह यीशु के मांस के मंदिर में वास किया।

    ० और अब वह हममें अर्थात उसकी कलीसिया में वास करता है।

- जब हमारा नया जन्म होता है, हम उसके शरीर में जन्म लेते हैं। जैसा कि हमने देखा कि पवित्रआत्मा हमें कलीसिया में डुबकी देता है। यदि हम सच्चे विश्वासी हैं तो हमारे पास कोई विकल्प नहीं हैं कि हम कलीसिया के हिस्से न हों। क्योकि एक ही आत्मा के द्वारा हमने सबने कलीसिया में बपतिस्मा पाया है।

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है – भाग 2

मसीह की देह

''इसी प्रकार तुम मिलकर मसीह की देह और अलग–अलग उसके अंग हो''
– 1 कुरिन्थियों 12:27

मसीह की देह, कलीसिया, एक **भेद** है, जिसे सदीयों से रहस्य रखा गया है।

''कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजाति लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं''– इफिसीयों 3:6

''ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान उन प्रधानो और अधिकारियों पर जो स्वर्गिय स्थानों में प्रगट किया जाए, उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह मे की'' – इफिसीयों 3:10–11
(देखिए इफिसीयों 1:9,10 और कुल्लुसियों 1:26,27)

जब हम आत्मिक रूप से जन्में हैं तो हम मसीह की देह में जन्में हैं। जैसा सन्त पौलुस कहता है हमारा उसकी देह में आत्मा के द्वारा ''बपतिस्मा'' हुआ है या ''डुबोए'' गए हैं। यदि हम सच्चे विश्वासी हैं तो हमारे पास कोई विकल्प नहीं हैं कि हम कलीसिया के हिस्से न हों – जो एक सच्ची कलीसिया है

''क्योंकि हम एक आत्मा के द्वारा एक देह में बपतिस्मा पाए हैं''
– 1कुरिन्थियों 12:13

आईये, मसीह की देह के विषय सोचें

शरीर जिसमें **देह धारण** किया। फिलिप्पियों 2:2, यहुन्ना 1:14
इस देह में मसीह पैदा हुआ, बड़ा हुआ, जिया और पृथ्वी पर एक मनुष्य की तरह 33 वर्ष तक सेवकाई की। फिर क्रुस पर चढ़ाया गया।

क्या यह उसकी देह का अन्त था??

शरीर जिसमें **जी उठा** ।
ईस्टर की सुबह, मसीह कब्र से एक नई देह के साथ बाहर आया, वह इस देह में चालीस दिन तक रहा। उसने चेलों को तैयार किया और निर्देश दिया। तब वह वापस स्वर्ग पर उठा लिया गया।

अभी क्या मसीह पृथ्वी पर बिना देह के है??

शरीर जो **आत्मिक** है।
पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया का जन्म हुआ। अब मसीह के पास नई देह है : जो समय और स्थान में सीमित नहीं, परन्तु जो समुद्रों और पीढ़ीयों की चौड़ाई तक फैल सकती है।

• आओ हम मसीह की देह के बारे मे थोड़ा ध्यान से सोचें। यीशु के पास पृथ्वी पर तीन तरह की देह थी :

○ शरीर जिसमें **<u>देह धारण</u>** किया।

— पहली देह क्रिसमस के दिन एक छोटे बच्चे के रूप में पैदा हुई।
— मनुष्य के रूप में बढ़ा, सीखाया, चंगा किया, प्रेम किया, रोया और अन्त में मर गया।

○ शरीर जिसमें **<u>जी उठा</u>** ।

— जब पृथ्वी पर ही था। उसने खाया पीया और उसे छुआ जा सकता था, वह एक आलौकिक दर्शन नहीं था।
— स्वतंत्रता से आ जा सकता था।
— उसने 40 दिन पृथ्वी पर सेवाकाई की।
— उसके चेलों ने जिस शरीर को देखा उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया।

○ इसके बाद पृथ्वी पर 10 दिनों तक उसके पास कोई शरीर नहीं था। पर हम पिन्तेकुस्त के दिन पवित्रआत्मा के द्वारा मसीह के **<u>आत्मिक</u>** शरीर को जन्म लेते हुए देखते हैं... पहले के अधिवेश्न में आपने अपने आपको उस जन्म को लेते हुए देखा और अपने बारें में कहानी लिखी!

यह वह देह थी जिसमें पहले दिन 2,000 थे, फिर अगले दिन 3,000 और शीध्र ही 10,000; तब 50,000। एक ही समय में वह यहुदीया, सामरिया में, फिर आखिया, अफ्रीका और इंग्लैड़ में रहने लगी — और अब यह इतनी बड़ी और महिमामयी है कि पूरी पृथ्वी पर फैल गई है।

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है – भाग 2

मसीह की देह

''इसी प्रकार तुम मिलकर मसीह की देह और अलग–अलग उसके अंग हो''
– 1 कुरिन्थियों 12:27

मसीह की देह, कलीसिया, एक **भेद** है, जिसे सदीयों से रहस्य रखा गया है।

''कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजाति लोग मीरास में सांझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं''– इफिसीयों 3:6

''ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गिय स्थानों में प्रगट किया जाए, उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह मे की'' – इफिसीयों 3:10–11
(देखिए इफिसीयों 1:9,10 और कुल्लुसियों 1:26,27)

जब हम आत्मिक रूप से जन्में हैं तो हम मसीह की देह में जन्में हैं। जैसा सन्त पौलुस कहता है हमारा उसकी देह में आत्मा के द्वारा ''बपतिस्मा'' हुआ है या ''डुबोए'' गए हैं। यदि हम सच्चे विश्वासी हैं तो हमारे पास कोई विकल्प नहीं हैं कि हम कलीसिया के हिस्से न हों – जो एक सच्ची कलीसिया है

''क्योंकि हम एक आत्मा के द्वारा एक देह में बपतिस्मा पाए हैं''
– 1कुरिन्थियों 12:13

आईये, मसीह की देह के विषय सोचें

शरीर जिसमें **देह धारण** किया। फिलिप्पियों 2:2, यहुन्ना 1:14
इस देह में मसीह पैदा हुआ, बड़ा हुआ, जिया और पृथ्वी पर एक मनुष्य की तरह 33 वर्ष तक सेवकाई की। फिर क्रुस पर चढ़ाया गया।

क्या यह उसकी देह का अन्त था??

शरीर जिसमें **जी उठा**।
ईस्टर की सुबह, मसीह कब्र से एक नई देह के साथ बाहर आया, वह इस देह में चालीस दिन तक रहा। उसने चेलों को तैयार किया और निर्देश दिया। तब वह वापस स्वर्ग पर उठा लिया गया।

अभी क्या मसीह पृथ्वी पर बिना देह के है??

शरीर जो **आत्मिक** है।
पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया का जन्म हुआ। अब मसीह के पास नई देह है : जो समय और स्थान में सीमित नहीं, परन्तु जो समुद्रों और पीढ़ीयों की चौड़ाई तक फैल सकती है।

उसकी देह कौन है? — **<u>हम उसकी देह है</u>**

- मसीह एक बार फिर इस संसार में उसकी देह के द्वारा रहता है। और जैसे वह अपने पार्थिव शरीर में था वैसी ही अब जो कुछ इस संसार में करता है अपने आत्मिक शरीर के द्वारा करता है। केवल वह हममें रहता है तभी वह हमारे चारों तरफ के लोगों पर प्रगट होता है।

- इसलिए कल जब आप सुबह शीशे में देखे तो कहे, ''तुम मसीह की देह हो''। जीवन जीने के लिए कितना अच्छा उदेश्य़? आपकी नौकरी कितनी भी नीरस क्यू ना हो, आप कितने भी तनाव में क्यूं ना हो और आपके हालात कितने भी उजडे क्यूं ना हो, आपके पास हर रोज जीवन जीने का उद्धेश्य़ है। हर रोज मसीह जीवित है और अपने आप को आप के, और उन सभी विश्वाशियो को जो आप से
  संबधित है, के द्वारा प्रगट कर रहा है।

''मसीही की देह''—कलीसिया के छः महत्वपूर्ण पहलु हैं।

- **<u>यहां पर बहुत सारे अंग हैं परन्तु देह एक ही है।</u>**
  — बहुत सारे विभिन्न अंग परन्तु सबके उपर केवल एक ही सिर — यीशु।
  — सभी एक ही रंग के नहीं हैं, सभी एक ही साम्प्रदाय के नहीं हैं।

- **<u>हरेक अंग शरीर के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए।</u>**

  — जब हमारा शरीर दिमाग की आज्ञा का प्रत्युतर देता है तब ही हमारा शरीर काम करता है। पर यदि हमारा शरीर का एक अंग ये कहे, ''नहीं, मैं आगे नहीं बढुंगा!'' तब हम काम नहीं कर पाऐगें।

  — इसी तरह से मसीह की देह के साथ होता है उसका शरीर केवल तब ही सही ढंग से काम करता है जब शरीर का हरेक अंग सिर के प्रति आज्ञाकारी रहता है।

- **<u>हरेक अंग शरीर के लिए महत्वपूर्ण है।</u>**

  — सभी सदस्यों का एक ही काम नहीं है परन्तु वे सभी महत्वपूर्ण हैं।

  — यीशु शरीर के सभी अंगों को योजनाबद्ध तरीके से जो वह वह चाहता है (हमारी इच्छा के अनुसार नहीं) वहां रख देता है — 1कूरिन्थियों 12:14—18

उसकी देह कौन है? – **हम उसकी देह है!!**

मसीह एक बार फिर इस संसार में उसकी देह के द्वारा रहता है। यदि वह हमें जीवन जीने का कोई अभिप्राय नहीं देता है जो जीवन बदलने वाला है; तब हमेशा के लिए क्या होगा??!!

अपनी स्वयं की देह को नमूना लेकर हम समझ सकते हैं :

''मसीही की देह''—कलीसिया के छः महत्वपूर्ण पहलु हैं

1. **यहां पर बहुत सारे अंग हैं परन्तु देह एक ही है।**

क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं और उस एक देह के अंग, बहुत होने पर भी मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है – 1 कुरिन्थियों 12:12

2. **हरेक अंग शरीर के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए।**

और सब कुछ उसके पावों तले कर दिया गया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणी ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है – इफिसीयों 1:22–23 (कुलुसियों 1:18 भी देखिए)

उदाहरण : बांहें, उंगलियां

3. **हरेक अंग शरीर के लिए महत्वपूर्ण है।**

और सब अंगों का एक सा काम नहीं, वैसा ही जो हम बहुत हैं मसीह में एक देह होकर आपस में एक दुसरे के अंग हैं – रोमियों 12:4–5

– ''हर एक अंग को दूसरे की आवश्यकता होती है''

> *इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं, यदि पांव कहे कि मैं हाथ नहीं इसलिए देह का नही तो क्या वह इस कारण देह का कारण नहीं? और यदि कान कहे कि आंख नहीं इसलिए देह का अंग नहीं तो क्या वह इस कारण का नहीं है कान ही होती तो सूंघना कहां होता? परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक–एक करके देह में रखा है* – 1 कुरिन्थियों 12:14–18

— कुछ अंग अधिक महत्वपूर्ण जान पड़ते हैं, परन्तु अकसर ये छुपे हुए अंग हैं जो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं —1 कुरिन्थियों 12:19—24

(उदारहण : हाथ बनाम जिगर)

— जब हम एक दूसरे पर निर्भर होकर काम करते हैं, तब यह, ''सभी अंगो के लिए खुशी का कारण होता है''।

- **<u>हरके अंग दुसरे अंग से प्रभावित होता है।</u>**

— ''यदि एक सदस्य दुःख उठाता है, तो सभी सदस्य उसके साथ दुःख उठाते हैं.
..'' — यदि मैं अपनी ऊंगली को हथौड़े से मारूं तो पूरे हाथ में दर्द आ जाता है और वह सूज जाता है, मूझे थोड़ा सा बुखार हो जाता है, यह मेरे शरीर के दूसरे अंगों को भी प्रभावित करता है।
— लोग सोचते है कि यह कोई मायने नही रखता कि वे क्या करते हैं... यह रखता है, क्योंकि हम सभी एक शरीर के अंग हैं हरेक अंग हरेक के काम से प्रभावित होता है।
— यदि आपका जीवन प्रभु को अप्रसन्न कर रहा है, तो कलीसिया के बाकी सदस्य जिनसे आप सम्बन्धित हैं भी प्रभावित हो जाते हैं।
— यदि आप आनन्द मान रहे हैं और आशिषित हैं, तब पुरा शरीर आशिषित है।
— यदि आपकी गवाही अच्छी नहीं है (अनैतिक, अवैध, बुरी संगति), मत सोचिए कि इससे केवल आप ही प्रभावित होते हैं। आपकी हानिकारक गवाही पूरी देह को प्रभावित कर रही है।

- **हरेक अंग को अपने काम को पूरा करना है।**

— देखने वाला यहां कोई नहीं है।
— यीशु ने हममें से हरेक को विशेष कामो को करने के लिए सुसज्जित किया है। वह चाहता है कि हम उसकी देह में अपने काम को पूरा करें।
— हमें यह पता लगाना है कि हमारा काम क्या है और उसके प्रति विश्वासयोग्य रहना है।

- **<u>हरेक अंग देह में कुछ जोड़ता या घटाता है।</u>**

— अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ के नीचे दिए गए पैरे ''किसी ने कहा है, अकसर मसीह शाब्दिक तौर पर संसार के सामने ठोकर...'' को पढ़ें।
— या तो हम मसीह की देह में कुछ जोड़ रहे हैं या कुछ घटा रहें हैं।
— यीशु के पास केवल एक ही देह है। पृथ्वी पर उसके जीवन में उसकी सेवकाई की प्रभावशीलता आज उसकी देह के हाथों में हैं।

– कोई नहीं कह सकता – ''आप महत्वपूर्ण नहीं हैं''

– कोई नहीं कह सकता – ''मैं महत्वपूर्ण नहीं हैं''

यदि वे सभी एक ही अंग होते, तो देह कहां होती? परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं परन्तु देह एक ही है, आंख हाथ से नहीं कह सकती कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं और ना सिर पावों से कह सकता है कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं, परन्तु देह के वे अंग, जो औरों से निर्बल दिख पड़ते हैं बहुत ही आवश्यक हैं, और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं और हमारे शोभायहीन अंग भी बहुत शोभयमान हो जाते हैं, फिर भी हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायहीन हो जाते हैं, फिर भी हमारे शोभाहीन अंगो का इसका प्रयोजन नहीं परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो – 1 कुरिन्थियों 12:19–24

ताकि देह में फूट ना पड़े परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें
–1 कुरिन्थियों 12:25

4. **हरके अंग दुसरे अंग से प्रभावित होता है।** .....

इसलिए यदि एक अंग दुःख पाता है तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं, और यदि एक अंग की बड़ाई होती है तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं – 1 कुरिन्थियों 12:26

5. **हरेक अंग को अपने काम को पूरा करना है।** .....

जिससे सारी देह एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है अपने आप को बढ़ाती है, वह प्रेम में उन्नति करती जाए – इफिसीयों 4:16

इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो और अलग–अलग उसके अंग हो – 1 कुरिन्थियों 12:27

जिसको जो वरदान मिला है...एक दूसरे की सेवा में लगाएं –
1 पतरस 4:10

6. **हरेक अंग देह में कुछ जोड़ता या घटाता है।** .....

किसी ने कहा है, ''अकसर मसीह को शाब्दिक तौर पर संसार के सामने ठोकर और गिरने का कारण बनया जाता है और अपनी देह के कारण मजाक का कारण ठहरता है।'' कितनी भयानक बात है! मैं नहीं बनुगा, प्रभु यही प्रार्थना करता हूं।

अन्तिम ''शब्द – क्रियात्मक तस्वीर'' में ये व्याख्या की गई हैं कि परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है यह मसीह की दुल्हन है।

- पुराने नियम में परमेश्वर ने **इस्राएल** को अपनी दुल्हन बुलाया। ''मैंने तुझे अपनी दुल्हन बनाया और तू एक व्यभिचारी स्त्री है''।

- नए नियम में यीशु की तस्वीर को **दुल्हे** के रूप में और उसकी कलीसिया को दुल्हन के रूप में देखते हैं।

- **इफिसीयों 5:25–27** में यीशु की इच्छा हमारे प्रति बिल्कुल सपष्ट बताई गई है।

    - वह अपनी दुल्हन को प्यार करता है।

    - उसने अपने आपको उसके लिए दिया है।

    - वह अपनी दुल्हन को पवित्र और साफ करता है।

    - वह उसके सारे दोषों को हटा रहा हैं।

    - वह उसको अपने लिए ले लेगा और विवहित आनन्द में अपने साथ हमेशा रहेगा।

    - वह उसको अपना सब कुछ दे देगा।

- कलीसिया के बारे मे उपरोक्त सभी बातें हमारी इन्तजार कर रही हैं।

- अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ के नीचे दिए गए दो पैरों को पढे।

मानव जाति की संसार के प्रति सदीयों से की गई मेहनत में से केवल एक ही चीज़ बनी रहेगी – कलीसिया।

सब कुछ को जंक लग जाएगा, सड़ जाएगा, नाश किया जाएगा और जला दिया जाएगा, परन्तु अपनी कलीसिया के द्वारा यीशु शासन और राज्य करेगा और अपनी कलीसिया को अनन्तता के युग में अपने प्रेम को प्रगट करेगा।

अब आप जानते हैं कि कलीसिया क्या है... इसलिए ये :

– आपके जीवन को बदल देनी चाहिए

– आपकी प्राथमिकताओ को बदल देगी।

– आपको हर रोज के जीवन के लिए उद्धेश्य दे देगी।

मसीही की दुल्हन

पुराना नियम – परमेश्वर ने .....**इस्राएल**.....को अपनी दुल्हन के रूप में लिया।
(यशायाह 62:5 यिर्मयाह 3:8; 5:7)

नया नियम– यीशु को .....**दुल्हें**.....के रूप में देखा गया।
(यहून्ना 3:39; मती 9:15)

मसीह का हमारे प्रति इरादा .....**इफिसीयों 5:25–27**..... में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है।

यीशु एक दुल्हन तैयार कर रहा है, उसे उज्जवल और सुन्दर और पवित्र बना रहा है। वह सभी झुर्रियां निकाल रहा है, और सभी दोष दूर कर रहा है। तब वह उसे अपने लिए ले लेगा।

''हे पतियो, अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया, कि उसके बचाव के द्वारा जल के स्नान से कुछ करके पवित्र बनाएं'' – इफिसीयों 5:25–26

हम कितने मूर्ख हो सकते हैं कि कलीसिया को अमहत्वपूर्ण कहते हैं। इसके लिए अपना समय का थोड़ा हिस्सा, सामर्थ और ध्यान देते हैं, राज्य और साम्राज्य तो समाप्त हो जाएगें, पृथ्वी सिकुड़ जाएगी, मनुष्य के सारे रिकार्ड़ और संस्थाए चली जाएगी पर कलीसिया स्थिर रहेगी।

संत पतरस कहते हैं, *''और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएगें और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएगें''*। (2पतरस 3:10–14) यीशु मसीह ने कहा, *''मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उसपर प्रबल न होंगे''* (मती 16:18)।

हर एक विश्वासी को कलीसिया में ''मिलना'' चाहिए

और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमे मिल गए (प्रेरित 2:41)

जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमे मिला देता था (प्रेरित 2:47)

और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरूष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया मे और भी अधिक आकर मिलते रहें – प्रेरित 5:14

इस कलीसिया में मिलने के लिए मैं क्या कदम उठाता हूं?

1. मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में **सिहांसन** पर बठाओ।
2. **बपतिस्मा** लेने के द्वारा नए नियम में प्रभु के पीछे चलो।
3. ''मसीह मं सम्पूर्ण जीवन''का **अनुभव** करें।
4. कलीसिया के **अगुवो** से मुलाकात करें।
5. ''दाहिने हाथ की संगति'' को **प्राप्त** करें।

मुझे कलीसिया के लिए क्या लाना चाहिए जहां मै ''मिलाया'' गया हूं?

1. बढ़ौतरी और परिपक्वता के लिए नियमित रूप से प्रदान अवसरों में हिस्सा लेने की इच्छा हो।

   – विभिन्न अराधनाओं में विश्वास योग्यता के साथ उपस्थिति हों।

   – परमेश्वर के वचन का लगातार अध्ययन करें।

   – ''कोईनोनिया'' समूह में शामिल हो जांए।

2. कम से कम अपनी आय का **दशवांश** दें।

3. कलीसिया की कोई **सेवकाई** में कार्य करने के लिए अपने आपकों समर्पित करें।

– अपने वरदानों के अनुसार

और जब कि उस अनुग्रह जो हमें दिया गया हैं हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यवाणी करने का दान मिला हो वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यवाणी करे, यदि किसी सेवा करने का दान मिला हो तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखाने वाला हो तो सिखाने में लगा रहे, जो उपदेश दे, जो अगुवाई करे वह उत्साह से करे, जो दया करे वह हर्ष से करे – रोमियों 12:6–8

– जोश और लगन के साथ।

प्रयत्न करने में आलसी न हो, आत्मिक उन्माद में भरे रहो, प्रभु की सेवा करते रहो– रोमियों 12:11

4. समर्पण के साथ .....**''चिन्ता''**.....करें और एक दूसरे की कलीसियाई रूपी परिवार में .....**''देखभाल''**.....करें।

''प्रेम निष्कपट हो, बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो, भाई–चारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया रखो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो''– रोमियों 12:9–10

आपके मनन के लिए

प्रथम, सच्चे विश्वासी पूरे संसार में ''परमेश्वर का परिवार'' बनाते हैं। आपके प्रेम का परमेश्वर के लिए पहला प्रदर्शन, उसके परिवार से व्यवहारिक रूप में प्रेम करना है। और यदि आपको उसके परिवार को प्रेम करना है तो, आपको उसके साथ एक हिस्से के रूप में जुड़ना होगा जो आपके समाज में है – आपकी स्थानीय कलिसीया। तब वह आपसे खुलेआम कहता है कि, आप उसके परिवार के लिए भलाई का कार्य करें। आपको उसके परिवार के दूसरे सदस्यों की देखभाल करनी होगी – दोनों शारिरीक और आत्मिक की। आपको उनके लिए प्रार्थना, उन्हें उत्साहित करने, उनके साथ रोने, और उनके साथ आनन्द मनाने के लिए कहा गया हैं।

दूसरा, जब आप अपने जीवन को उसे उद्धारकर्ता और प्रभु मानकर समर्पित करते हैं तो आप पृथ्वी पर मसीह की देह के भाग बन जाते हैं। आपको अपना स्थान लेना है और उसकी देह में सेवकाई ग्रहण करना है। आपको आज संसार के लिए ''मसीह'' होना है। उसके पास हाथ नही हैं, कोई मुंह या हृदय नहीं परन्तु आप ही हैं।

यदि देह के सभी सदस्य आपकी तरह होते :

तो संसार मसीह को कैसे देखेगा?

कितने प्रभावशाली तरीके से मसीह संसार की आवश्यकता को पूरा करेगा?

देह के बीच में संगति कैसी प्यार भरी, कैसी चंगाई वाली और कैसी मजबूर कर देने वाली होगी?

मसीह की ''संगति'' के बाहर जो लोग भुखे है को ढुढना, कैसा आकर्षण होगा?

आपके प्रत्युत्तर के लिए

कौन से ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें आप स्थानीय मसीह की देह में कार्य करना चाहेगें?

प्रथम

— पिछले सप्ताह के प्रश्न पत्र के प्रश्न 1, 2 और 3 को शीघ्रता से देखिए आप कुछ और समय लेना चाहेंगें ताकि लोग प्रश्न 4, 5 के उत्तर आपस में बांट सकें।

— बाकी बचे ''तीमुथियुस के पत्र'' को जमा करें, जब आपने उनकी जांच कर ली है तो उन्हें ''मसीह में सम्पूर्ण जीवन'' के अगुवे को दे दें।

अब

समूह के हर सदस्य को आपस में अपने विचार बांटने को कहें :

''आपकी जान पहचान में कौन सा ऐसा व्यक्ति है जिसे आप समझते हैं कि वह मसीह की देह का सच्चा सदस्य हैं और मसीह की देह को सही रूप से प्रगट करता है? हमारे लिए उनका वर्णन कीजिए

तब

1. हरेक व्यक्ति को ये अवसर दें कि वे इन प्रश्नों के उत्तरों में कुछ नोट्स लिखें, तब समूह को आपस में बांटने दीजिए।

   ''व्यवहारिक रूप में आप क्यो सोचते हैं कि यीशु को क्या यह अधिकार है कि वह आपसे यह आशा करे कि आप उसकी देह — कलीसिया में कार्य करने वाले एक सदस्य हों?

   कागज पर या बलैक बोर्ड़ पर समूह द्वारा दिए गए विचारो की एक सूची बनाईये और अपना भी विचार उसमे दीजिए।

2. इफिसीयों 5:25—27 क्या सीखाता है कि मसीह कलीसिया को कैसे देखता है? कलीसिया के प्रति हमारे व्यवहार के लिए यह हमें क्या सीखाता है?

3. भिन्न—भिन्न लोगों को उनके विचार बांटने दीजिए जहां वे आपने आपको देख सकें वे सथानीय विश्वासीयों की देह मे सेवा के लिए कहां रखे गए हैं।

अगले सप्ताह के लिए

अधिवेश्न 6 के प्रश्न पत्र को पूरा करें।